मन को संभालता है बाल साहित्य

– खजान सिंह

जीवन की कठिनाइयां, दुश्वारियां यूं ही कम न थीं कि कोरोना महामारी ने बुरी तरह जीवन की लय ही बिगाड़ दी। वर्ष 2020 को विदा करते हुए हमने उम्मीद की थी की 2021 में हम नए सामान्य की ओर बढ़ रहे हैं। घरों में और जहाँ तहां कैद जिंदगियों में बसंत आगमन के साथ नई जुम्बिश दिखने लगी थी। हम वर्चुअल दुनिया से निकलकर वास्तविक दुनिया में कदम बढ़ाने लगे थे। हम ख्वाब देखने लगे थे कि अब हम खुली हवा में सांस ले पायेंगे। तमाम फासलों के साथ भौतिक दूरियाँ नजदीकियां बनेंगी और न जाने क्या–क्या अभिलाषाएं मचल रही थी।

हमारा मूल काम शिक्षा की बेहतरी है उसमें छाये संकट के कारण हुई क्षति का आकलन किया जा चुका था इससे उभरने के लिए मुकम्मल योजना आकार ले चुकी थी हम अपने समूचे लाव लश्कर के साथ तैयार हो गए थे। मगर दुर्भाग्य है कि यह हो न सका। अप्रैल और मई–2021 आने तक हमने जो मंज़र देखा वह कभी भुलाया नहीं जा सकता वह दुःस्वप्न की तरह जीवन भर हमारा पीछा करेगा। 2020 के दर्दनाक दृश्यों, चिंताओं से उभरे भी नहीं थे कि 2021 की पहली तिमाही में यह जहां फिर से लॉकडाउन हो गया था। असहाय आमजन, हांफती व्यवस्था, उखड़ती सांसे, दर्दनांक मौतें देखी, जाएं तो जाएं कहां? करें तो करें क्या? फिर से यह कश्मकश होने लगी। मगर कहते हैं न कि भला काम करने के लिए कभी देर नहीं हुई रहती। बर्तोल्त ब्रेख्त की पंक्तिया हैं कि "क्या अंधेरे समय में भी गीत गाये जायेंगे? हां, गाये जायेंगे तब भी मगर अंधेरे के बारे में" बुरे वक्त में भय और संकंट भी ताकत देता है इस संकट और नई परिस्थितियों में काम करने के लिए तमाम भले लोगों ने फिर से कमर कस ली हैं।

मगर समर अभी शेष है मित्रों लाज़िमी है कि इस वर्ष मूल में हमारी चिंता है कि इस महामारी में जो यह शैक्षिक संकट उत्पन्न हुआ है उसमें बच्चों के सीखने की क्षति को पूरित करना बहुत जरूरी है। यह क्षति अनेक रूपों में दिख रही है हम यह नहीं भूले हैं कि बच्चे भी जीते–जागते इंसान हैं जो ज्ञान, बोध, सृजन और मानवीय संबंधों के जगत में बहुत संवेदनशीलता के साथ

नवीन कुमार, कक्षा–4, राजकीय प्राथमिक विद्यालय डांडा जंगल, विकासनगर, देहरादून

मौजूद रहते हैं। बेहतर भविष्य के लिए उनकी जरूरतों को संबोधित करना इस समय की सबसे बड़ी प्राथमिकता है।

हमने माह नवम्बर–2021 में सैकड़ों प्राथमिक शिक्षक साथियों के साथ बुनियादी भाषा और गणित शिक्षण पर बातचीत की थी उनमें से 80 प्रतिशत स्कूलों के शिक्षकों ने अपने 2 माह के स्कूल शिक्षण अनुभवों के आधार पर बच्चों की स्थिति का एक मोटा आकलन प्रस्तुत किया, शिक्षकों ने बताया कि तीन तरह से बच्चों को देख रहे हैं एक वह समूह है। जिनको सब कुछ सिरे से सिखाया जाना है। दूसरा व समूह है जो भाषा और गणित और अन्य अवधारणाओं को समझने में संघर्ष कर रहे हैं। उनका काफी लर्निंग सर्वे हुआ है। तीसरा बहुत कम संख्या में वह बच्चे हैं जो अपनी कक्षा के अनुरूप स्तर के हैं। शिक्षकों ने एक तथ्य यह भी बताया कि कोविड–19 के लॉकडाउन के बाद जब स्कूल खुले तो महसूस हुआ कि सामाजिक और भावनात्मक मुद्दे कई रूपों में है। शिक्षक साथियों ने यह भी बताया कि स्कूल बदरंग हो गए हैं, रिसोर्स व शिक्षण अधिगम सामग्री बेकार हो गयी हैं स्कूलों का माकूल माहौल भी बनाना है। साथ–साथ तीन तरह से बच्चों को भी सिखाना हैं, तो क्या किया जाए? कैसे प्लान करें कि हम हर जरूरत के बच्चे को सिखा पायें? इस क्विक एक्सरसाइज से यही समझ आ रहा है कि शिक्षकों के पास शिक्षण की पुख्ता योजना होनी बहुत

जरूरी है जिसमें वर्तमान जरूरतों के मुताबिक शिक्षण की रणनीतियां और शिक्षण के प्रभावी अभ्यास हो।

निःसंदेह वर्तमान परिस्थितियों में भाषा शिक्षण के बुनियादी कौशलों को प्राप्त करने के लिए बाल साहित्य सबसे उपयुक्त जरिया लगता है। देखा जाए तो बच्चों की पाठ्य पुस्तकों में भी बाल साहित्य ही एक उपयुक्त चयन के रूप में नजर आता है। पाठयपुस्तकें अतिरिक्त यही बताती हैं की इस चयन को कक्षा में कैसे बरता जाए? बाल साहित्य में भाषाई कौशलों को विकसित करने की खूब संभावनाएं मौजूद रहती हैं मसलन आरंभिक भाषा शिक्षण व पढ़ने लिखने के विस्तार को देखें जैसे मौखिक भाषा का विकास, ध्वनि और उसके लिए निर्धारित चिह्नों में सम्बन्धों की समझ, लिपि से परिचय, दूसरों की कही/लिखी सरल बात को समझ पाना और अपेक्षित उत्तर दे पाना। शुरुआती पढ़ना/लिखना, सरल वाक्यों में अपनी बात को मौखिक व लिखित रूप में व्यक्त कर पाना और पढ़ने लिखने के विस्तार में, मौखिक अभिव्यक्ति में विस्तृत और सटीक विवरण प्रस्तुत करने की क्षमता, किसी घटना, कहानी या कविता पर अपने विचार बेझिझक व्यक्त कर पाने की क्षमता, कब, कहां, कैसे, क्यों आदि प्रश्न करने और जवाब दे पाने की क्षमता। पढ़े हुए को अपने संदर्भों से जोड़कर अर्थ निकाल पाने की क्षमता, अपने स्तर के किस्से कहानियों को पढ़कर उसके मर्म को समझ पाने की क्षमता, संदर्भ के आधार पर अपरिचित शब्दों के अनुमान लगा पाने की क्षमता, पढ़े हुए या सुने हुए पाठ के आधार पर अपनी समझ को सही वाक्य व आधारभूत व्याकरण और विरामचिह्नों का उपयोग करते हुए मौखिक और लिखित रूप में व्यक्त कर पाने की क्षमता, अनुभव और कल्पना के आधार पर किस्से कहानी या कविता जैसा कुछ गढ़ पाने की क्षमता बड़े ही रोचकता व खूबसूरती के साथ मौजूद रहती हैं।

इसके साथ–साथ बाल साहित्य बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक पक्ष को भी प्रभावी रूप में संवेदित करता है। यह महामारी का दौर है इसमें बच्चों की मनस्थिति को भी अनेक रूपों में प्रभावित किया है। इसमें बाल साहित्य का उपयोग बेहद महत्वपूर्ण है। साथ ही यह भी समझना कि बच्चों के बारे में लिखी गयी सभी किताबें बाल साहित्य नहीं होतीं। संभव है कि बच्चे की मुख्य भूमिका वाली किताबों की विषयवस्तु या उनमें उठाए गए मुद्दे बच्चों के लिए उपयुक्त न हों। अच्छा बाल साहित्य सरल होता है लेकिन उसे लिखना सरल नहीं होता। हम देखें तो बहुत सारा लोकप्रिय बाल साहित्य पर्याप्त जटिल है, लेकिन वो बच्चों की संज्ञानात्मक और भावनात्मक संवेदनशीलता को उद्दीपित करता है। एक अच्छी किताब बच्चों में सशक्त भावनाओं का संचार करती है। ये बच्चों को एक ऐसा झरोखा प्रदान करती हैं जिससे कि बच्चे अपने स्वयं के जीवन और इससे जुड़ी चिंताओं का विश्लेषण कर सकें। अच्छी किताबें बच्चों को दूसरों के जीने के तरीकों को देखने–समझने और साथ ही साथ यह एहसास करने में सक्षम बनाती हैं कि दूसरों की चिंताएं/परेशानियां शायद उनकी अपनी चिंताओं से बहुत अलग नहीं हैं। अच्छी किताबें कल्पना को सिर्फ पंख ही नहीं देतीं वरन आकार भी देती हैं। बाल साहित्य विधाओं की दृष्टि से भी भरा–पूरा हो। जानकारीपरक पुस्तकें, गतिविधि आधारित पुस्तकें, कवितायें, पहेलियां, पत्र डायरियां सभी कुछ हो सकता है, बशर्ते ज्ञान देने व उपदेश देने की नीयत न हो। इसमें फिक्शन के साथ–साथ अनेक प्रकार का मौखिक, डिजिटल साहित्य व अनेक प्रकार के रोचक टेक्स्ट शामिल है इसका फलक काफी विस्तृत है। तालाबंदी के दौरान अनेक लोगों के इसको खोजा बीना है, संकलित किया है और प्रसारित भी किया है। तो अब उचित वक्त है कि इसका प्रयोग किया जा सके।

यूं तो हमारी सभ्यता ने बच्चों को अभी ठीक से समझा ही नहीं है तिस पर यह महामारी की चोट। इस बात की गंभीरता को समझा जा सकता है कि इधर जब कुछ कुछ खुलने की शुरुआत हुई तो हमने बच्चों की मनोस्थिति को टटोलने का प्रयास किया इसमें एक अभिभावक ने बताया कि बच्चे किस तरह के दुःस्वप्न से गुज़र रहे हैं उनके मन में किस तरह के मनोमालिन्य की स्थितियां मौजूद हैं।

एक पांच साल की बच्ची एकांत कोने में बैठी अपनी दादी को याद करते हुए सिसक रही थी। उनकी आंखों से आंसुओं का सैलाब थम ही नहीं रहा था। जब मैडम ने गले लगाया तो वह उनसे जोर से लिपट गयी। वह सिसकते हुए बोली की काली परी आयी थी। उसने बड़ी बड़ी लाल आंखें दिखाईं और कहा कि कोई नहीं बचेगा। सारे खिलौने–छोटू गुड़िया, मंजली, खरगोश सब ले जायेगी। दादी तो गयी पर पापा, मांजी, दीदी सबको ही ले जायेगी। यह कहते–कहते वह फफककर रो पड़ी।

यह एक बुरा सपना था। मगर हम देख पाते हैं कि तमाम बच्चों के बस्ते, खेल खिलौने, सुख–चैन खुशियां, चहक–महक खेल– सृजन के संवाद बहुतेरी आशाएं और आकाक्षाएं, घर की स्थिति गांव मोहल्ले के सम्बन्ध सब बंदी के पहले जैसे भी नहीं है। न जाने इस तरह के भय आशंकाएं कितने रूपों में प्रकट हो रही हैं। यह महसूस हो

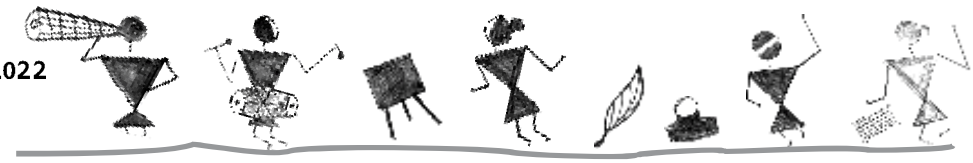

कहानी– खुशियों की लड़ाई

खुशी को नानी के घर जाना है। बहुत दिनों से सोच रही है कि इस बार मम्मी से कहेगी किसी को नहीं बताना कि हम कब नानी के घर जा रहे हैं। बल्कि इस बार मम्मी को नहीं ले जाएगी। ना ही ले जाएगी दीदी को। मौसी के बच्चों में से भी किसी से नहीं कहेगी कि वह नानी के घर कब आ जा रही है। पर ऐसा कैसे हो सकता है।

खुशी की दो मौसी हैं बड़ी मौसी छोटी मौसी और दोनों ही नानी के ही शहर में और नानी के घर के पास ही रहती हैं। ऐसा क्यों होता है खुशी अक्सर सोचती है। ये मेरी मौसियां दूसरे शहर में क्यों नहीं रहतीं? माँ की तरह इन्होंने दूसरे शहर में शादी क्यों नहीं की? सबको बताना क्यों जरूरी है कि हम नानी के घर आ रहे हैं? कितने दिन रहेंगे? ये भी बताना पड़ता है सबको। नहीं बताएंगी किसी को कुछ भी, सब अकेले खाएगी। नानी के साथ खूब खेलेगी, पर नानी तो बूढ़ी भी हो गईं हैं और मामी स्कूल जाती हैं तो अकेले–अकेले वो क्या करेगी। फिर यादों के टोकरे में से खुशी ने एक याद उठाई पर वो तो पूरी यादों की लड़ थी। सभी बड़े अपने कामों में लगे रहते हैं तब बड़ा अच्छा लगता है जब सब बहन भाई इकट्ठे होते हैं और खूब खेलते हैं। ऐसा लगता है जैसे हम वहां के प्रधानमंत्री हैं। दीदी हम सब की लीडर बन जाती है। शरारतें करने पर सबके हिस्से की डांट भी दीदी अपने ऊपर ले लेती है। हम बहनों को बहुत मजा आता है जब छोटे भाई पर छुपम–छुपाई खेलते हुए बहुत बार दाम आती है। जब वो सब रजाई ओढ़कर छुप जाते हैं, जब नानी भी छुपने में मदद करती हैं, जब नाना के किताबों वाले कमरे में भी सब बहनें छिप जाती हैं और भाइयों को वहां छुपने से मना करती हैं, मजा आता है उन सब को जब मामी पूरी का आटा गुंधती है और सब बहन भाई चट्ट कर जाते है, बहुत मजा आता है जब सब एक कार में ठुंसकर मामा के साथ घूमने जाते हैं, जब नाना जी सबको मिठाई की दुकान पर ले जाकर कहते हैं कि जिसको जो खाना है खाओ। बच्चों की पसंद के बिस्कुट और नमकीन से भरा टिन याद आ रहा है खुशी को। जब सब याद कर लिया तब खुशी ने सोचा छुट्टी लगने से एक महीने पहले ही सब इंतज़ार शुरू कर देते हैं कि हम कब और कितने दिन के लिए नानी के घर आएंगे? नानी भी बार–बार पूछती हैं और बच्चों की पसंद का सामान सहेजने लगती हैं तब खुशी ने सोचा कि वो सबको बताएगी खूब जोर–जोर से बताएगी– वो आ रही है। अपनी नानी के घर आ रही है।

– ऋचा रथ, बी–6, सेल्स टेक्स कॉलोनी,शंकर नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़

रहा है कि कोरोना की डरावनी शक्ल आस–पास के वातावरण में घटित अनिष्ट, भय इत्यादि का तमाम निचोड़ बच्चे भी निकाल लेते हैं और इससे प्रभावित होते हैं। यह सब विचार, भाव दृश्य, छवियां, उनके मन में भी दुबके रहते हैं। यूं भी हमारी संस्कृति ऐसी है कि बच्चों को कई बार भयभीत करती है। तभी शायद गुरूदेव रविन्द्रनाथ ने गीतांजलि की शुरुआत इसी वाक्य से की कि 'निर्भय मन सिर ऊंचा' भयवित, आशंकित मन सामाजिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए घातक है। विद्या यदि मुक्त करती है तो इसमें यह तय है कि सभी तरह के भय और दुर्बलताओं से मुक्ति भी जरूरी है।

इस स्थिति ने निपटने के लिए साहित्य ही वह ताकत रखता है जो हमारे भी और बच्चों के भी भीतरी और बाहरी संसार को अनुकूल परिस्थिति में ढालने के लिए बेहद मददगार होता है। यह एक आजमाया हुआ जरिया है जब भी कोई दुनिया, देश, समाज, संस्कृति संकट में आयी है तब–तब बहुत हद तक साहित्य ने ही उभारा है। हम लोग साहित्य आनंद के लिए पढ़ते–पढ़ाते हैं हमें इस समय भी आनंद की जरूरत हैं। साहित्य के जरिये समझ के अनेक स्वरूप विकसित होते है। साहित्य में ही वह ताकत है कि इसके जरिए अपने अनुभवों के कतरों को जोड़कर समग्रता में देखने की कुव्वत हासिल होती हैं। इसमें ऐसे अनुभव भी शामिल होते हैं जो बच्चे ने अपने पांच ज्ञानेंद्रियों से नहीं प्राप्त किये बल्कि किसी और के अनुभव है। बच्चे अपने परिवेश को अनेक रूपों में जानना समझना सीखते हैं। जन्म से मृत्यु तक के हर तरह के आख्यान और जानकारियां हासिल करते हैं इसलिए यह अभी उचित वक्त है कि बाल साहित्य पढ़ने या पढ़कर सुनाने या मौखिक रूप में बालसाहित्य को बरतने के इस पर बातचीत करने के खूब अवसर बनाए जाएं इसके लिए स्कूल में कोई स्थान और इसके लिए समय निर्धारित कर बाल साहित्य के जरिए बच्चों के साथ खूब बातें की जाएं आप पायेंगे कि इसके बहुत सकारात्मक परिणाम सामने आयेंगे।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं।)